

॥ मार्गबन्धुस्तोत्रम् ॥

शम्भो महादेव देव।
शिव शम्भो महादेव देवेश शम्भो।
शम्भो महादेव देव ॥

फालावनम्रत्किरीटं फालनेत्रार्चिषा-दग्ध-पञ्चेषुकीटम्।
शूलाहतारातिकूटं शुद्धमर्घेन्दुचूडं भजे मार्गबन्धुम् ॥ १ ॥

अङ्गे विराजद्वुजङ्गम् अभ्र-गङ्गा-तरङ्गाभि-रामोत्तमाङ्गम्।
ओङ्कारवाटी-कुरङ्गं सिद्धसंसेविताङ्गिं भजे मार्गबन्धुम् ॥ २ ॥

नित्यं चिदानन्दरूपं निहुताशेष-लोकेश-वैरिप्रतापम्।
कार्तस्वरागेन्द्र-चापं कृत्तिवासं भजे दिव्यसन्मार्गबन्धुम् ॥ ३ ॥

कन्दर्प-दर्पध्नीशं कालकण्ठं महेशं महाव्योमकेशम्।
कुन्दाभदन्तं सुरेशं कोटिसूर्यप्रकाशं भजे मार्गबन्धुम् ॥ ४ ॥

मन्दारभूतेरुदारं मन्दरागेन्द्रसारं महागौर्यदूरम्।
सिन्धूर-दूर-प्रचारं सिन्धुराजातिधीरं भजे मार्गबन्धुम् ॥ ५ ॥

अप्यय्यज्ज्वेन्द्रगीतं स्तोत्रराजं पठेद्यस्तु भक्त्या प्रयाणे।
तस्यार्थसिद्धिं विधत्ते मार्गमध्येऽभयं चाऽशुतोषो महेशः ॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at:
http://stotrasamhita.net/wiki/Margabandhu_Stotram.

 generated on November 15, 2025